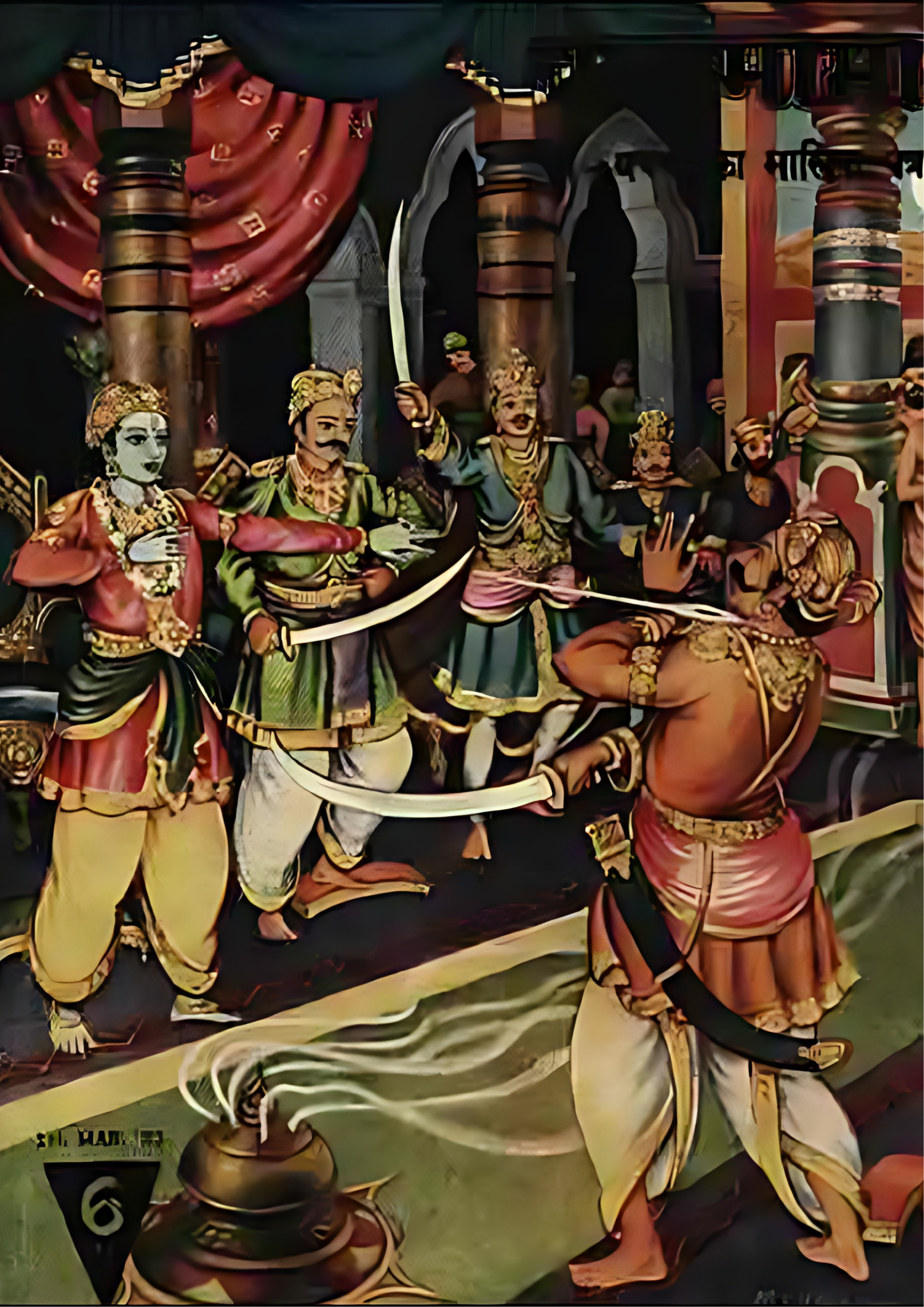
6

नीयत बिगड़ी

किसी गाँव में एक चरवाहों का लड़का रहता था जिसका नाम झगड़ू था। वह बहुत भला लड़का था। रोज़ सबेरे उठ कर ढोरों को गाँव के नजदीक वाले जङ्गल में हाँक ले जाता और शाम तक चरा कर घर लौट आता। एक दिन की बात है; झगडू जङ्गल में एक पेड़ के नीचे बैठा हुआ था और गाएँ मैदान में चर रही थी। इतने में पानी बरसने लगा। बादल गरजने लगे और बिजली चमकने लगी। सहसा कडाके की आवाज़ हुई, मानों आसमान फट गया हो और झगडू से बीस-पचीस गज के फासले पर बिजली गिरी।

झगडू की आँखें चौंधिया गई। थोड़ी देर बाद जब उसने साहस करके आँखें खोलीं तो बारिश थम गई थी।

झगडू डरते डरते उस जगह गया जहाँ बिजली गिरी थी। वहाँ की जमीन झुलस कर काली पड़ गई थी। इतने में उसकी नज़र किसी चमकती हुई चीज़ पर पड़ी। उसने झुक कर उठा लिया तो वह एक अंगूठी थी।

बेचारा झगडू फूला न समाया। उसने नीलम जड़ी वह अंगूठी पहन ली। साँझ को जब गायों को हाँक कर घर लौट चला तो झगड़ू के पैरों में पंख लग गए थे। वह उँगली में लगी हुई अंगूठी को घुमाता-फिराता जा रहा था। इतने में चार-पाँच गाँव वाले उस राह से आए। वे गायों की ओर देख कर कहने लगे-"बड़ी अजीब बात है ! गाएँ अकेली लौट रही हैं। झगड़ू कहाँ चला गया?"

झगडू को, जो गायों के पीछे पीछे चला आ रहा था, ये बातें सुन कर बड़ा अचरज हुआ। उस समय अंगूठी का नीलम जड़ा रुख हथेली की तरफ था। उसने वैसे ही उसे ऊपर घुमा दिया। तुरन्त गाँव वाले कहने लगे- "अरे झगडू ! कहाँ चला गया था

राजनारायन

तू ? अचानक कहाँ से टपक पड़ा ? तब झगड़ू को विश्वास हो गया कि जरूर यह इस अंगूठी की करामात है। अंगूठी में जड़ा हुआ नीलम हथेली की तरफ करने से पहनने वाला अदृश्य हो जाता है और दूसरी तरफ धुमाने से फिर सब को दिखाई देने लगता है।

बस, अंगूठी की इस विचित्र शक्ति का पता लगते ही झगड़ू की नीयत बिगड़ गई। उसने सोचा-"अब मैं मनमानी कर सकता हूँ। मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।" उस रात जब सारा गाँव सो गया तो झगड़ू चुपचाप घर से निकला। उसने अंगूठी का नीलम हथेली की तरफ कर लिया जिससे वह अदृश्य हो गया। फिर एक मोटी सी लाठी हाथ में लेकर गया और नन्दलाल का दरवाजा खटखटाया। नन्दलाल एक किसान का नाम था, जिसने एक बार झगड़ू की गौओं को खेत चरते देख कर उसे गालियाँ दी थीं। झगड़ू उस समय तो मन मसोस कर रह गया था। लेकिन आज मौका पाकर उसने बदला चुकाने का निश्चय कर लिया।

बेचारा नन्दलाल हड़बड़ा कर चारपाई से उठा और दरवाजा खोला। बस, झगड़ू ने आव न देखा ताव, लाठी से पीट-पीट कर उसका कचूमर निकाल दिया और सारी कसर निकाल ली। बेचारा नन्दलाल बेहोश होकर गिर पड़ा।

झगड़ू वहाँ से चल कर सीधे घनसाव के घर गया। सावजी अन्दर बैठे बैठे दिन भर के सौदे के पैसे गिन रहे थे। किवाड़ भिड़के हुए थे। झगड़ू चुपके से किवाड़ धकेल कर अन्दर चला गया। इस चोर को सावजी कैसे देख पाते ! उन्होंने रुपए गिन कर थैली में रख दिए और तकिए के नीचे रख कर आराम से सो रहे। जब झगड़ू ने देखा कि सावजी खर्राटे ले

रहे हैं तो थैली निकाल ली और वहाँ से भागा। घर पहुँच कर उसने सोचा कि आज रात के लिए इतना काफी है और आगम से सो गया। सबेरा होने पर गाँव के लोग जाग गए। नन्दलाल के पिटने और धनसाव के रूपए चोरी जाने की खबर चारों ओर फैल गई। लोग जगह जगह जमा होकर इसी बात की चरचा करने लगे। झगडू उनकी बातें सुन-सुन कर मन-ही-मन खूब हँसने लगा।

अब अंगूठी के प्रभाव से झगडू जब चाहता, अदृश्य हो जाता और जो मन में आता कर बैठता। उसे किसी का डर न रहा। एक दिन गाँव की दो जवान लड़कियाँ घड़े बगल में दबाए पनघट की ओर जा रही थीं। दोनों के गले में सोने की मालाएँ थीं। झगडू ने देखा तो सोचा-"अच्छा मौका है !" बस, अदृश्य होकर उनके पीछे पीछे चला और मालाएँ तोड़ कर ले भागा। लड़कियाँ "चोर ! चोर !" कह कर चिल्लाने लगी। लेकिन जो चोर दिखाई न दे, उसे पकड़े कौन ? जब इस तरह दिन-दहाड़े चोरी होने लगी और चोर का बिलकुल पता न चला तो गाँव वाले बहुत घबरा गए। झगडू ने सोचा कि अब तो राज उसी का है।

चरवाहों का लड़का झगडू अब बड़ा भारी चोर बन गया। उसने गौएँ चराना छोड़ दिया और चोरी करना ही अपना पेशा बना लिया। आस-पास के गाँवों में भी वह दिन-दहाड़े चोरी करने लगा। यहाँ तक कि लोग उसका नाम सुनते ही काँपने लगे।

यो कुछ दिन लोगों के घरों में चोरियों करके झगडू का मन ऊब गया । उसने सोचा-"इन भुखमरों के घरों में चोरी करने से क्या मिलेगा ? चोरी करनी है तो चलो राजा के किले में!"

बस, दूसरे दिन झगडू अदृश्य होकर राजा के किले में घुस गया। उसने पहले

सेनापति और फिर मन्त्री के घर में चोरी की। बस, सारे किले में हाहाकार मच गया। जब मन्त्री और सेनापति के ही घर में चोरी होने लगी तो मामूली लोगों का क्या ठिकाना ! जगह जगह सिपाही पहरा देने लगे। लेकिन कोई फायदा न हुआ।

एक दिन किले में सब लोग कानाफूसी करने लगे कि राजा ने हीरे-जवाहर, सोने-चाँदी के गहने आदि सभी बहुमूल्य वस्तुएँ लोहे के मजबूत सन्दूकों में बन्द करके अपने महल में रखवाने का हुक्म दिया है।

झगडू को यह खबर सुन कर बड़ी खुशी हुई। उसने सोचा-"चलो, यह बहुत अच्छा हुआ। अब चोरी के लिए घर-घर भटकने की जरूरत न पड़ेगी। जब मन होगा, राजा के महल से चुरा लिया करूँगा।"

उस दिन अँधेरा होते ही झगडू राजा के महल में घुस गया। थोड़ी देर बाद उसने देखा कि मन्त्री एक कोठरी का दरवाजा खोल रहे हैं और कुछ सिपाही एक बहुत बड़ा लोहे का सन्दूक उठा कर उसके अन्दर रख रहे हैं। सन्दूक अन्दर रखवा कर, किवाड़ भिडका कर, मन्त्री सिराहियों के साथ चले गए।

झगडू यह देख कर फूला न समाया। उन लोगों के जाते ही अन्दर घुस कर उस ने सन्दूक का ताला तोड़ डाला। लेकिन उस सन्दूक में ईंट-पत्थरों के अलावा कुछ नहीं था। झगडू यह देख कर भौंचक्का रह गया। वह भाँप गया कि जरूर दाल में कुछ काला है। लेकिन जब तक पीछे मुड़ कर देखा तो दरवाजा बन्द हो चुका था और बाहर से ताला भी लग गया था। उसने यह सोच कर किसी तरह धीरज घर लिया कि सवेरा होने पर दरवाजा खुलेगा और किसी तरह उसकी जान बच जाएगी। उस बेचारे को मन्त्री की चाल नहीं मालूम थी।

दिन हो गया और फिर रात भी हो गई। इस तरह बहुत से दिन-रात बीत गए। लेकिन किसी ने उस कोठरी का दरवाजा न खोला। बेचारा झगडू भूखा-प्यासा खूब सुख कर काँटा बन गया और तड़प तड़प कर मर गया।

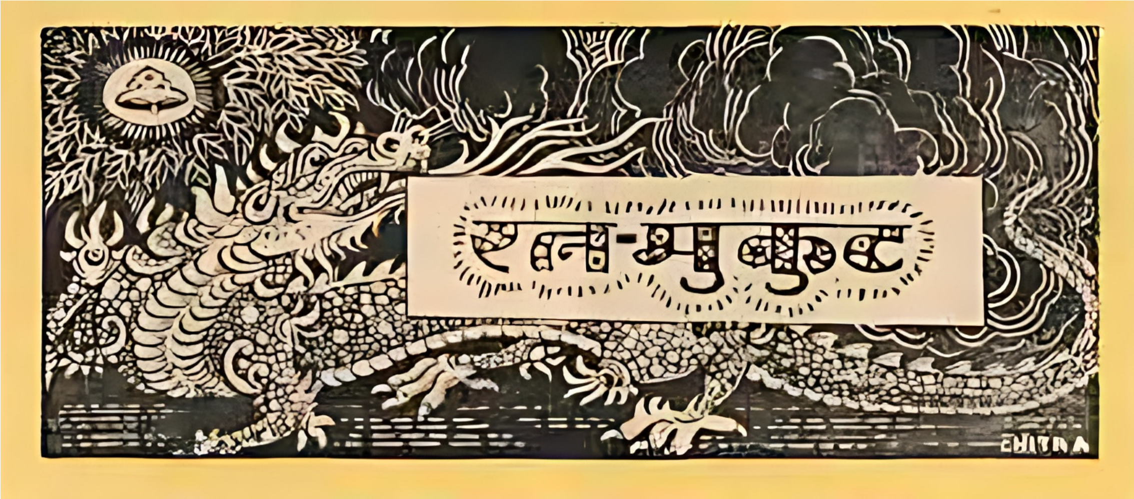

ठीक आधी रात के वक्त मन्दपाल को किसी ने नींद से जगाया। आँखें खोलीं तो देखा- सामने एक सधू खड़ा था। मन्दपाल चौंक उठा। सधू ने उसका हाथ पकड़ कर कहा- "बाहर चलो। तुम से जरा बात करनी है।" मन्दपाल उसके पीछे पीछे चलने लगा। आवाज सुनते ही उसने साधू को पहचान लिया था।

मन्दपाल अस्तबल से अपना घोड़ा खोल लाया। यह घोड़े की रास पकड़ कर चलने लगा। साधू उसके साथ चलने लगा। थोड़ी दूर जाने पर पेड़ों का एक झुरमुट दिखाई दिया। उस झुरमुट में घुस कर साधू भी अपना घोड़ा ले आया। अब दोनों घोड़ों पर सवार हो गए और थोड़ी ही देर में एक निर्जन स्थान पर पहुँच गए।

"गुरुजी ! अच्छा, यह तो बताइए कि रज-भवन में कैसे घुस आए।" मन्द्रपाल ने अपना घोड़ा रोक कर अचरज के साथ पूछा।

"अजी, तुम अभी बच्चे हो। तुम क्या जानो ? साधू को कहीं भी जाने में मुश्किल नहीं होती। दाढ़ी जो बढ़ाई वह इस काम आई। अच्छा बताओ तो, कि सामन्तों को किसने उकसाया था वह चिठ्ठी लिखने के लिए, जिससे उन्होंने राजा हर्षपाल को सन्देशा भेजा था कि रत्न-मुकुट-हीन राजा को हम कर नहीं देंगे। वह सब इस बन्दे की करामात थी। जानते हो, अब सामन्त लोग

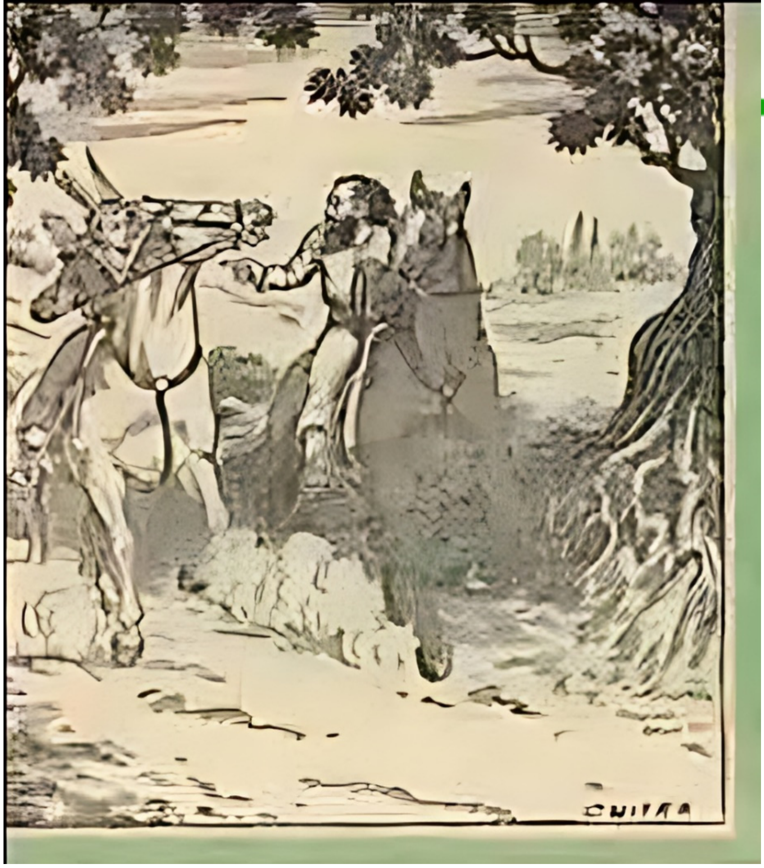

क्या कहते हैं ! वे कहते हैं कि वे स्वतन्त्र दोना चाहते हैं। मन्दपाल को भल्लाण का राजा बनाना चाहते हैं। हाँ, एक सामन्त हमारे झाँसे में नहीं आया। वह है अर्थ का ससुर, मगध-राज अमरसिंह। सुना है कि वह हमारे खिलाफ कुछ बक रहा है। लेकिन उसकी सुनेगा कौन?" राजगुरु बड़े गर्व के साथ बोला। "अच्छा! आप को कैसे मालूम हुआ कि मैं यहाँ हूँ ?" मन्दपाल ने पूछा। तब राजगुरु ने हँस कर कहा-"अरे पगले ! तो मैं इतना भी नहीं जान सकता ? सब इन्तज़ाम कर लेने के बाद सीधे मैं घर चला गया। वहाँ मुझे पता चला कि तुम गुर्जर देश जा रहे हो ! बस, घोड़े पर पीछा करने लगा। भल्लाण के सेनापति ने स्वयं मुझे तुम्हारा पता बता दिया !"

तब मन्दपाल ने अपने दूत बनाए जाने की सारी कहानी सुना दी। राज-गुरु ने कहा-"अच्छा! अब तुम्हारे आगे बढ़ने की कोई जरूरत नहीं। तुम यहीं से लौट जाओ।जाकर राजा से कह देना कि मैं गुर्जर देश के राजा से मिल कर आया हूँ। राजा के सन्देश के उत्तर में कह देना- 'राज-मुकुट राजस्व का चिन्ह है। यह कोई घरेलू मामला नहीं है। सभी सामन्तों और सारी प्रजा का इस मामले से ताल्लुक है। यह विषय राजनीति का है। जब तक रत्न-मुकुट नहीं मिल जाता और उसे धारण करके अर्धपाल यथा विधिः राजा नहीं बन जाता, तब तक हम कर नहीं चुका सकते। धौंस दिखाने से कोई फायदा नहीं। हम तलवार का जवाब तलवार से देना जानते हैं। इस तरह कड़ा जवाब देकर किसी तरह राजा हर्षपाल को लड़ाई के लिए भड़का दो। उन्हें लड़ने को आमादा करने की जिम्मेदारी तुम ले लो; बाकी सारा काम में सम्हाल लूँगा।"

इस तरह मन्दपाल को सिखा-पढ़ा कर राज-गुरु चला गया।

उधर राजा हर्षपाल और किरात राज बड़ी उतावली से मन्दपाल के लौटने की राह देख रहे थे। मन्दपाल बहुत जल्द लौट आया। राजमहल में कदम धरते ही हर्षपाल और किरात-राज ने पूछा-"क्या हुआ ?"

"और होगा क्या ? मेरे साथ साथ आप की भी नाक कट गई ! उन्होंने मेरा घोर अरमान किया और आप से मेरे नाते की चर्चा चला कर, जी भर कर कोसा। ऐसी ऐसी बातें कही, जिन्हें दुहराते शरम आती है। कुछ न पूछिए। मेरा खून खौल रहा है। अपने को सामन्तों का अगुआ बताने वाले उस गुर्जर राज का शीस धूल में लोटते देखे बिना मुझे चैन नहीं आएगा। और क्या कहूँ ? लड़ाई की तैयारी कीजिए आप ! मैं भी जाकर अपने बहादुरों को बुला लाता हूँ !" इतना कह कर मन्दपाल तुरन्त किरात राज्य को रवाना हुआ।

मन्दपाल की बातें सुन कर हर्षपाल को भी सामन्तों पर बहुत क्रोध हो आया। वह कहने लगा-"उस गुर्जर राज की आँखें तो सिर पर चढ़ गई

हैं। लड़ाई को शायद खेल समझ लिया है उसने ! मजा चखा दूँगा उसे।"

अब हर्षपाल के मन में तरह तरह के विचार उठने लगे। उसने सोचा-"मन्दपाल तो सेना सहित मदद करेगा ही। बचे अर्धपाल के ससुर मगध-राज। कल दूत भेज कर उनकी भी मदद माँगूगा। किरात राज की सलाह लेकर दूसरे दिन उसने एक विश्वास-पात्र व्यक्ति को दूत बना कर मगध को भेजा।

किरात राज्य पहुँच कर मन्दपाल ने अपने जङ्गली वीरों को शिक्षा देना शुरू किया। उसकी सेना तैयार हो गई। तब वह भल्लाण के लौट चला। राह में उसने जिस राज-भवन

में मुकाम किया, उसी में मगध को जाने बाला दूत भी ठहरा हुआ था।

मन्दपाल ने उस से हेल-मेल कर लिया और बातों में लगा कर पूछा कि राजा की चिठ्ठी कहाँ है ? दूत पहले तो हिचकिचाया। लेकिन जब मन्दपाल ने अपनी राज मुद्रिका दिखाई तो दूत ने निसङ्कोच चिठ्ठी दे दी।

मन्दपाल ने चिठ्ठी खोली; लेकिन पढ़ न सका। सारी चिठ्ठी गुप्त-लिपि में लिखी थी। मन्दपाल ने पहले सोचा- "चिठ्ठी ले लें; किसी से पढ़वा लेंगे।" लेकिन सोचने पर सुझा कि इस से बड़ी गड़बड़ी मच जाएगी। इसलिए उसने चिठ्ठी लोटा दी और यह सोच कर सन्तोष कर लिया कि जब वह उत्तर लेकर लौटेगा तो सारी बातें मालूम हो जाएँगी। इस आशा से वह उस दूत के लौटने तक उसी राज भवन में डटा रहा।

लेकिन जब वह दूत मगध देश पहुँचा तो मालूम हुआ कि राजा अमरसिंह के वृद्ध पिता बहुत बीमार हैं। झञ्झट में फँसे हुए अमरसिंह को चिठ्ठी का उत्तर देने में एक हफ्ता लग गया। लेकिन अन्त में काम बन गया। अमरसिंह का उत्तर आशा-जनक था। उत्तर लेकर दूत सीधे भल्लाण-राज जा पहुँचा। रास्ते में कहीं नहीं रुका। अमरसिंह का उत्तर देखकर राजा हर्षपाल को बहुत आनन्द हुआ।

इधर उस राज भवन में दूत के लौटने की राह देख-देख कर मन्दपाल का जी उब गया। उसने सोचा-"यह दून बड़ा चालाक है। यह जरूर मुझे धोखा दे कर निकल गया है। यह सन्देह होते ही उसने भल्लाण-राज जाने का विचार छोड़ दिया। उलटे पाँव किरात राज्य को लौट गया। उसने सोचा-"चलो, पहले राजगुरु से मिल कर हाल-चाल जान लें।" उसका विश्वास था कि जरूर राज-गुरु उससे मिलने आएँगे। और हुआ भी ऐसा ही। मन्दपाल ने घर

जाकर देखा तो राज-गुरु दो तीन दिनों से उनका इन्तजार कर रहा था। जब मन्दपाल ने दूत से अपनी भेंट का हाल सुनाया तो राज-गुरु ने कहा-"तुमने अच्छा ही किया। समय ऐसा आ गया है कि हमें फूँक-फूँक कर कदम धरना होगा। चिन्ता न करो। मैं सब कुछ सम्हाल लूँगा।"

दोनों ओर से लड़ाई की तैयारियाँ होने लगी। भल्लाण राज्य में युद्ध की घोषणा हुई। बड़े जोश के साथ वीर लोग आगे बढ़े। उधर सामन्तों की सेनाएँ भी बढ़ चलीं। एक बड़े मैदान में दोनों का सामना हुआ। सामन्तों की सम्मिलित सेना से भी भल्लाण के वीरों की ही संख्या ज्यादा थी।

फिर मन्दपाल की सेना भी मदद कर रही थी। इससे हर्षपाल का साहस बढ़ गया।

लड़ाई शुरू हुई। भल्लाण के वीर जान पर खेल कर लड़ने लगे। जीत निश्चित जान पड़ने लगी। ठीक इसी समय पाँसा पलट गया। विश्वासघाती सेनापति ने सेना को पीछे हटने का हुक्म दे दिया। मन्दपाल सेना सहित जाकर दुश्मनों में मिल गया। अमरसिंह की सेना जो आनेवाली थी, नहीं आई। इन सब कारणों से भल्लाण के वीरों की बुरी तरह हार हुई। वे सिर पर पैर रख कर भागने लगे। कोई उन्हें हिम्मत बँधाने वाला भी न रहा। बेचारा हर्षपाल अकेले खड़ा खड़ा अपना सर्वनाश देख रहा था। इतने में राजगुरु ने, जो मन्दपाल की सेना में एक मामूली सैनिक के भेष में खड़ा था, उसे देख लिया और मन्दपाल से कहा-"देखते क्या हो ? पकड़ लो हर्मपाल को !"

लेकिन मन्दपाल जरा पशोपेश करने लगा। तब राज-गुरु ने गरज कर कहा-"पकड़ लो उसे पहले! नाता-रिश्ता पीछे देखा जायगा !" आखिर मन्दपाल ने सैनिकों

के साथ जाकर हर्षपाल को गिरफ्तार कर लिया। राज-गुरु ने अपना छद्म भेष छोड़ दिया और हर्षपाल के सामने खड़े होकर कहकहे लगाने लगा। बेचारा हर्षपाल क्रोध और बेबसी के मारे रुँआसा हो गया। अब राज-गुरु का सारा कुचक्र उसकी समझ में आ गया। उसी समय एक सैनिक ने आकर कहा कि बन्दियों में किरात-राज और अर्धपाल नहीं हैं। मन्दपाल व्याकुल हो गया। राज-गुरु ने कहा-"अच्छा! देखा जाएगा।"

इतने में थोड़ी दूर से बड़ा कोलाहल सुनाई पड़ा और धूल के बादल उठते दिखाई देने लगे। मगध-राज की सेना आ रही थी। लेकिन जब तक बेचारे अमरसिंह पहुँचे तब तक सर्वनाश हो चुका था। सारा हाल जान कर बेचारे सिर धुनने लगे कि मैं भल्लाण की सहायता नहीं कर सका। लेकिन वे बुद्धिमान आदमी थे। जानते थे कि नाहक सामन्तों से बैर मोल लेना भी ठीक नहीं। इसलिए पिता की बीमारी का बहाना बना कर समय पर आ न सकने के लिए माफी माँगी और इस तरह अपनी बला टाली। हर्षपाल जो बन्दी बना खड़ा यह सब देख रहा था-विश्वासघाती नीच ! अधम !" कह कर दाँत पीसने लगा।

अब मन्दपाल का राज तिलक कराने के लिए सामन्त सभी भल्लाण जा पहुँचे। वहाँ बहुत ढूँढने पर भी उन्हें अर्द्धपाल की पत्नी और उसका बच्चा चित्रभानु न दिखाई दिया। सारा किला और राज का कोना कोना छान डाला। लेकिन उनका कोई पता न चला।

यह खबर सुनकर मन्दपाल चकित रह गया। राज-गुरु सोच में पड़ गया। अन्य सामन्त भी व्याकुल हो गए। राज-गुरु ने हुक्म दिया कि "सारा राज छान डालो और जहाँ कहीं दिखाई दें, उन्हें तुरन्त पकड़ लाओ। तुरन्त सैनिक लोग खोज करने चारों ओर दौड़े। ज्यों ही भल्लाण-वीरों के हारने और हर्षपाल

के बन्दी बनाए जाने की खबर मालूम हुई, त्यों ही अर्धपाल की पत्नी ने रानी का भेष छोड़ कर एक ममूली दासी का भेष बना लिया था। अपने बच्चे चित्रभानु को चिथड़ों में लपेट कर उसने एक गरीबिन के बच्चे का रूप दे दिया था। इस तरह सब की आँख बचा कर वह बड़ी चालाकी से किले से निकल भागी थी।

पैर उठाए न जाते थे और बच्चे का बोझ भी ढोना पड़ रहा था। इस हालत में बह बेचारी, अन्त में एक पेड़ के नीचे मूर्धित होकर गिर पड़ी। बच्चा चित्रभानु यह देख कर घबरा गया। उसने अपनी माँ को हिलाया डुलाया। लेकिन वह न जगी। तब वह नन्हा बालक और भी घबरा गया और "माँ ! माँ" कह कर रोने चिल्लाने लगा। उस घने जङ्गल में वह राह भूल गया और इधर-उधर भटकने लगा।

थोड़ी देर बाद मन्दपाल के सिपाही ढूँढ़ते-ढूँढ़ते आखिर उस जगह आ पहुँचे जहाँ अर्धपाल की रानी मूर्छित पड़ी थी। सिपाहियों में से एक ने उसे देखते ही पहचान लिया।

इतने में उस बेचारी की मूर्छा टूटी और उसने सिपाहियों को देखा। जब बच्चा भी नहीं देखाई दिया तो उसने समझा कि इन्हीं नहीं ने उसे खतम कर दिया है। वह रो रोकर कहने लगी-"बताओ, मेरा बच्चा कहाँ है ? मेरा नन्हा मुन्ना कहाँ है ?" तब सिपाहियों को शक हुआ कि इसी ने लड़के को कहीं छिपा दिया है और यह नाटक कर रही है। वे डराने लगे-"बताओ, बच्चे को कहाँ छिपा रखा है। नहीं तो-"

आखिर वे उसे पकड़ कर ले गए और राज-गुरु के सामने खड़ी कर दिया। राज-गुरु ने उसे देख कर आग बबूला होकर कहा-"जिस जगह हर्षपाल को कैद कर रखा है उसी जगह इसे भी कैद कर रखो। हाँ, खोज-ढूँढ कर बच्चे का पता लगाओ ! किरात-राज और अर्धपाल को भी जिन्दा या मुर्दा पकड़ लाओ!" उसी समय—

[संशेष]

दण्ड या पुरस्कार

सैकड़ों साल पहले किसी देश में कलाधर नाम का एक चित्रकार रहता था। कलाधर के बाप दादे सभी बड़े बड़े चित्रकार होते आए थे। इसलिए उस घराने का राज-दरबार से बहुत दिनों से नाता चला आया था। अधेड़ उमर में पिता के अचानक मर जाने के कारण कलाधर बीस बरस की कच्ची उम्र में ही दरबारी चित्रकार बना दिया गया। इस तरह नियुक्त होने के कुछ ही दिन बाद उसे राजा का एक जरूरी काम करना पड़ा।

राजा के एक अठारह साल की लड़की थी। उस के विवाह के लिए यत्न हो रहे थे। राज-ज्योतिषियों ने बताया भी था कि जल्द ही कामदेव सरीखे एक सुन्दर राज-कुमार से उसका विवाह होने वाला है। इसी से राजा ने कलाधर को बुलाया और अपनी लड़की प्रेमवती के आठ-दस चित्र बनाने की आज्ञा दी। इसी से उसे दो-तीन दिन तक राजकुमारी के साथ अन्तःपुर में समय बिताने और चित्रण के लिए राजकुमारी की हर चेष्टा और हर हाव-भाव का अध्ययन करने की इजाजत मिली।

प्रेमवती बड़ी तेज़ लड़की थी। जब ज्योतिषियों ने बताया कि वह कामदेव सरीखे सुन्दर पुरुष से विवाह करने जा रही है, तो उसने समझा कि यह उनकी अतिशयोक्ति है। लेकिन कलाधर को देख कर अब वह समझ गई कि उनकी भविष्यवाणी सोलहों आने सच है। क्योंकि कलाधर तो कामदेव सरीखा ही नहीं, बल्कि साक्षात कामदेव ही था। उसे विश्वास न हुआ कि उन राजकुमारों में, जो कलाधर के बनाए उसके चित्र देख कर ब्याह करने आते, कोई उस से भी सुन्दर होगा।

कलाधर को भी मालूम हो गया कि राजकुमारी उस पर बड़ी कृपा रखती है। इसलिए उसको खुश करने के लिए उसने बड़े ही जतन से चित्र बनाने का निश्चय किया। उसने एक चित्र बनाया और पद्मिनी जाति की स्त्री के लिए जो जो लक्षण बताए गए हैं, उन सब का उस में समावेश कर दिया। हुलिया मिलाने के लिए उसने प्रेमवती की दो-

तीन निशानियों उस चित्र में अङ्कित कर दी। चित्र को देख कर प्रेमवती ने कहा-"अगर यह चित्र तुमने मुझे खुश करने के लिए बनाया है तो मैं धन्य हूँ।" यह सुन कर कलाधर फूला न सनाया।

जब शाम को वह लौटने लगा तो प्रेमवती ने सलाह दी-"तुम अभी युवक हो। चित्रों को ध्यान लगा कर स्थिरता से बनाया करो। यों जल्दी-जल्दी पूरा मत कर लिया करो। अगर तुम चाहते हो कि मेरा चित्र चिरस्थाई हो, तो उसे कड़ी से कड़ी मेहनत करके बनना होगा ! समझ गए ? कल फिर आना !"

कलाधर ने कहा-"जी हाँ !"

दूसरे दिन राजकुमारी ने चित्रकार पर और भी प्रेम दिखाया। उसने उससे शतरञ्ज खेला। अपना खूब बनाव-सिङ्गार रचाया। उसको गाने सुनाए। अकेली उसके साथ बाग में टहली। वहीं उसे खाना खिला कर, नए नए वस्त्राभूषण वगैरह दिए और प्यार से विदा किया।

बेचारा कलाधर अब पागल सा हो गया। प्रेमवती उसकी आँखों में बस गई। उसके बिना सारा संसार सुना दिखाई देने लगा। उसका मधुर स्वर अभी तक कानों में गूँज रहा था। उसकी मोहनी मूरत रह रह कर आँखों के सामने नाच उठती थी।

उस रात को जब सब लोग सो रहे थे, कलाधर शहर में टहलने निकला। चादनी छिटक रही थी और ठण्डी हवा चल रही थी। इतने में कहीं से कोयल कूक उठी। लेकिन प्रकृति का यह शृङ्गार कलाधर को अच्छा नहीं लगा। उसने सोचा-"जब तक राजकुमारी प्रेमवती सामने नहीं तो इन सब से क्या फायदा ?" फिर उसने सोचा -"कहाँ राजकुमारी और कहाँ मैं ? अचानक मेरी यह कैसी हालत हो गई !" दूसरे दिन उसका सूखा हुआ मुँह देख

कर राजकुमारी ने पूछा-"क्या बात है ?" तब किसी तरह साहस बटोर कर कलाधर ने अपना प्रेम प्रगट कर दिया। उसके मन में डर था कि राजकुमारी जरूर गुस्सा हो जाएगी। लेकिन राजकुमारी जरा भी गुस्सा नहीं हुई। उलटे हमदर्दी दिखाई। उसे धीरज बँधाया और किसी तरह उसके मन को थोड़ी शान्ति पहुँचाई।

ज्योतिषियों की अमोघ वाणी इस तरह सफल हुई। प्रेमवती और कलाधर का प्रेम कुछ दिन तक फुला-फला। लेकिन इसी बीच एक बड़ा बिघ्न उठ खड़ा हुआ।

कलाधर ने जब रनवास में कदम रखा तो प्रेमवती के अलावा और भी कुछ रमणियाँ उसकी सुन्दरता की शिकार हो गई थीं। खास कर प्रेमवती की बहुत सी सखियाँ उसे चाहने लगी थीं। उन में से चपला नाम की एक युवती थी, जो बड़ा हौसला रखती थी। चपला कलाधर को अपने वश में करने के लिए तरह तरह के कुतन्त्र रचने लगी। लेकिन राजकुमारी के यत्न से सब विफल हो गए। आखिर क्रोध में अकर चपला ने राजा के पास जाकर सारी कहानी कह दी। इतना ही नहीं, उसने कलाधर को रङ्गे हाथों पकड़ लेने का एक उपाय भी राजा को बता दिया।

एक दिन शाम को प्रेमवती बनव शृङ्गार करके अपने प्रियतम से मिलने जा रही थी कि मन्त्री ने आकर कहा-"बेटी ! कुछ राजकुमारों के चित्र आ गए हैं। जरा उन्हें एक बार देख तो लो !" "कल देख लूँगी ! जल्दी क्या है !" प्रेमवती ने जवाब दिया।

"कल दिन अच्छा नहीं है। अभी देख लो न !" मन्त्री ने जवाब दिया।

लाचार होकर प्रेमवती मन्त्रीजी के साथ राजकुमारों के चित्र देखने चली गई। इधर लता कुञ्ज में कलाधर प्रेमवती की

राह देख रहा था। वह बेचारा कैसे जाने कि देरी क्यों हुई। आखिर देर तक इन्तजार करने के बाद नुपरों की ध्वनि सुनाई दी और सुनहरे घूँघट में मुँह छिपाए एक स्त्री ने अन्दर प्रवेश किया।

"आज इतनी देरी क्यों हो गई, प्रेम? क्या तू नहीं जानती कि तेरी इन्तज़ार करने में मुझे कितनी बेचैनी होती है?" कलाधर ने पूछा।

तब उस औरत ने अपना घूँघट हटा लिया। कलाधर के मुँह पर काटो तो खून नहीं। वह प्रेमवती नहीं, चपला थी। इतने में राजा के सिपाहियों ने आकर उसे घेर लिया। देखते देखते उन्होंने बेचारे कलाधर को गिरफ्तार कर लिया और जेल में रख दिया।

कलाधर ने जो अपराध किया था उसके लिए मरण के सिवा और कोई दन्ड था ही नहीं। लेकिन राजकुमारी की भी कुछ गलती उसमें थी; इसलिए ऐसा निर्णय किया गया, जिस से भगवान ही उसको मरण दण्ड दें या उसे छोड़ दें।

दरबार में राजगद्दी के सामने ही दो कमरे बनाए गए, जिनमें से एक में एक युवती बन्द थी और दूसरे में एक बाघ। किस कमरे में बाघ है और किस कमरे में कन्या, इसका किसी को पता नहीं था। अपराधी को किसी न किसी कमरे का दरवाजा खोलना था। बाघ वाले कमरे का दरवाजा खोलता तो उसे स्वयं मरण- दण्ड मिल जाता। कन्या वाले कमरे का दरवाजा खोलने पर उस कन्या से ब्याह करना पड़ता।

दरबार के आधे दायरे में सीखञ्चे खड़े कर दिए गए। बाहर दरबारी सभी अपने अपने आसनों पर बैठ गए। राजकुमारी भी पिता की बगल में गद्दी पर बैठ गई। सब लोगों के मन में बड़ी उत्सुकता थी कि

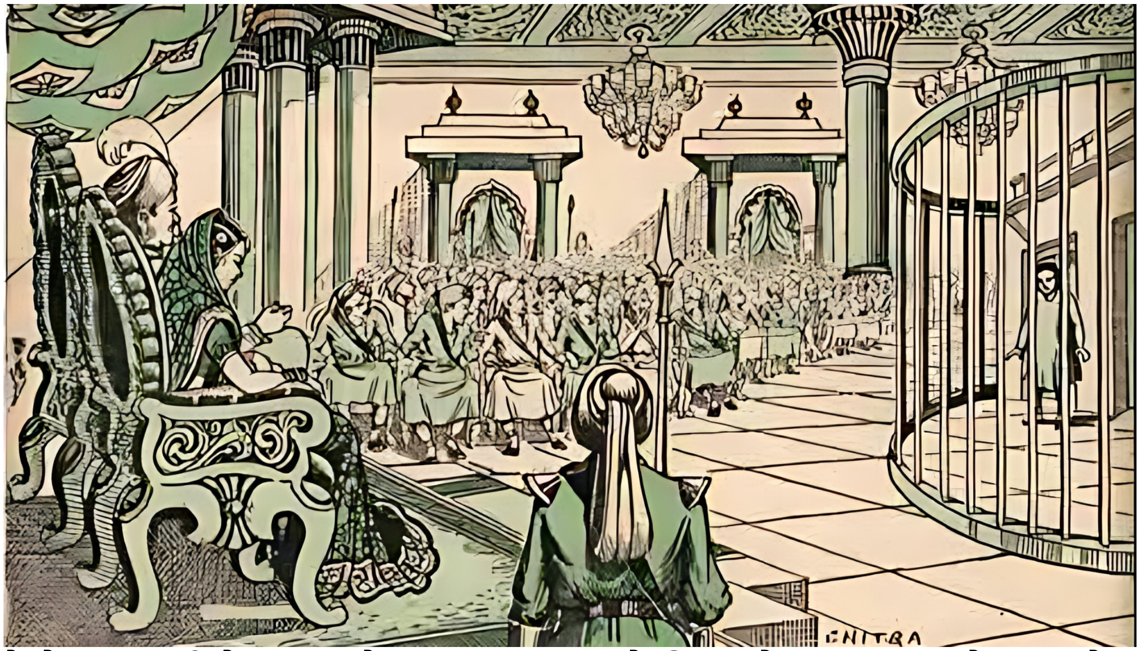

देखें, अपराधी के भाग्य में क्या बदा है ! किस कमरे में कन्या है और किसमें बाघ, और वह कन्या है कौन, यह सिर्फ राजकुमारी और मन्त्री को ही मालूम था।

बेचारा कलाधर सीखञ्चों के अन्दर खड़ा कर दिया गया। सब की नजरें उस पर गड़ी हुई थीं। जिन्दगी और मौत के बीच खड़े होकर कलाधर ने एक बार दोनों कमरों के दरवाजों पर अपनी निगाह डाली। फिर उसकी निगाहें उस भरे दरबार में किसी को खोजती हुई सी चारों ओर घूम गई और राजकुमारी पर आकर गड़ गई। उन निगाहों में एक कातरता थी, जैसे वे प्रार्थना कर रहीं हो कि मुझे इस सङ्कट से बचाओ ! राजकुमारी के इशारा करने भर की देर थी कि उसकी जान बच जाती। बेचारा कलाधर उसी इशारे की राह देख रहा था।

इधर राजकुमारी के दिल में तूफान मचा हुआ था। वह इस युवक से प्रेम करती थी। उसकी नजरों में यह संसार का सब से सुन्दर युवक था। उसको बाघ का शिकार बनाने से बढ़ कर घोर पाप और कुछ नहीं हो सकता था। जितने लोग दरबार में उपस्थित थे, उनमें से कोई भी उसकी यह दुर्दशा नहीं देखना चाहता था। सभी मना रहे थे

कि वह कन्या वाले कमरे का दरवाजा ही खोले। इस हालत में यह स्वाभाविक भी था कि प्रेमवती, जिससे कलाधर बहुत प्रेम करता था और जो उससे प्रेम करती थी, न कि वह बाघ का शिकार न बने।

लेकिन एक बात और भी थी। कलाधर जीता या मरता, यह निश्चित था कि वह उसका नहीं हो सकता। चपला ने दोनों का नाता कभी का तोड़ दिया था। इतना ही नहीं चपला ने अपनी स्वामिनी का प्रेम भग्न ही नहीं किया, बल्कि जाकर उस कन्या वाले कमरे में खड़ी हो गई।

राजकुमारी के इशारा करने भर की देर थी कि कलाधर की जान बच जाती। मगर तब वह चपला का हो जाता। चपला की दुबारा जीत हो जाती।

एक हार का बदला लेना अभी बाकी था; इतने में यह दूसरी हार भी स्वेच्छा से कैसे स्वीकार कर ले वह ? राजकुमारी प्रेमवती यह कड़वी घूँट पीकर चुप कैसे रह जाए !

इस संघर्ष से किसी तरह प्रेमवती ने छुटकारा पा लिया। मन्त्री ने अपराधी को किसी एक कमरे का दरवाजा खोलने की आज्ञा दी। अपराधी टक लगाए राजकुमारी की ओर देख रहा था। इतने में उसकी मुराद मिल गई। राजकुमारी ने इशारा कर दिया। बेचारे कलाधर के मुख पर मुसकान खेलने लगी। उसने बेधड़क जाकर, राजकुमारी ने जिस कमरे की ओर इशारा किया था, उसका दरवाजा खोल दिया।

उस खुले दरवाजे में से बाघ झपटा कि.. चपला बाहर आई! कलाघर को, जिसका अपराध बस, इतना ही था कि उसे राजकुमारी कम हो गया, प्रेमवती ने दण्ड दिया पुरस्कार ? यह आप ही समझ लें।

[The Lady or the Tiger' का स्वेच्छानुवाद]

एक बार जब कनौज का बूढ़ा मन्त्री मर गया और उस राज्य के मन्त्री का पद खाली हुआ तो राजा ने सोचा कि किसी चतुर और बुद्धिमान व्यक्ति को नियुक्त करना चाहिए। इसलिए उसने ढिँढोरा पिटवा दिया-"जो राजा के सवाल का जवाब देगा, उसे मन्त्रि-पद दिया जायेगा।" राजा का ढिँढोरा सुनते ही औरत-मरद, बूढ़े-बच्चे, जिन जिन को अपनी बुद्धि का अभिमान था, सभी मन्त्रि-पद के लोभ से अपना भाग्य आजमाने चले।

बहुत से अध्यापक जिनकी सारी जिन्दगी बच्चों से सवाल करने में बीती, सोचने लगे-"ऐसा कोई सवाल नहीं जिसका जवाब हम न जानते हों। चले; देखें, राजा कैसा सवाल करते हैं।" पण्डितों ने सोचा-"राजा को पुराने शास्त्रों पर बहुत विश्वास है। उनका सवाल जरूर शास्त्रों में से होगा।" व्यापारियों ने सोचा-"हमने अपनी बुद्धि के बल से इतना धन कमाया है। क्या हम राजा के सवाल का जवाब नहीं दे सकते ?" इस तरह मन्त्रि-पद के लिए बहुत से उम्मीदवार आए। सब को राज-महल के लम्बे-चौड़े अहाते में कतारों में खड़ा कर दिया गया। दरबारियों के साथ राजा के यहाँ आते ही चारों ओर सन्नाटा छा गया। राजा ने कहा-"भाइयो! मेरा सवाल सुन लो- बारह में से चार निकाल लिया तो बचा कितना ! एक एक कर आगे बढ़ो और अपना अपना जवाब धीमे से मुझसे कहते जाओ! जिसका जवाब सही होगा, उसे मन्त्री बना दिया जायगा।"

राजा का सवाल सुन कर सभी लोग फूले न समाए। इस सवाल का जवाब तो बच्चे भी दे सकते थे। एक एक कर राजा के सामने जाने और अपना जवाब बताने लगे।

महावीर प्रसाद

सब का जवाब एक ही निकला-"बारह में से चार निकाल लिया तो बचा आठ।" बड़े बड़े पण्डित, अध्यापक, व्यापारी, बूढ़े, बच्चे सभी का यही जवाब था। लेकिन राजा ने सब का जवाब गलत बताया। इस से सब को बड़ी निराशा हुई।

आखिर बचा भूषण नाम का एक किसान का लड़का। वह काँपते हुए राजा के सामने आ खड़ा हुआ। उसके साथ उसका पिता भी था। राजा ने पूछा-"यह कौन है!" "हुजूर! ये मेरे पिताजी हैं। अकेले आने में डर लगा; इसलिए इन्हें भी साथ लेते आया।" भूषण ने जवाब दिया। "अच्छा! बता मेरे सवाल का जवाब!" राजा ने कहा।

"हुजूर! बारह में से चार निकाल लिया तो बचा कुछ नहीं !" भूषण ने कहा। "हम श्री भूषण को आज से अपना मन्त्री बनाते हैं।" राजा ने उसका जवाब सुनते ही कहा। यह सुन कर दरबारियों को बहुत क्रोध आया। "यह गँवारू बच्चा मन्त्री का

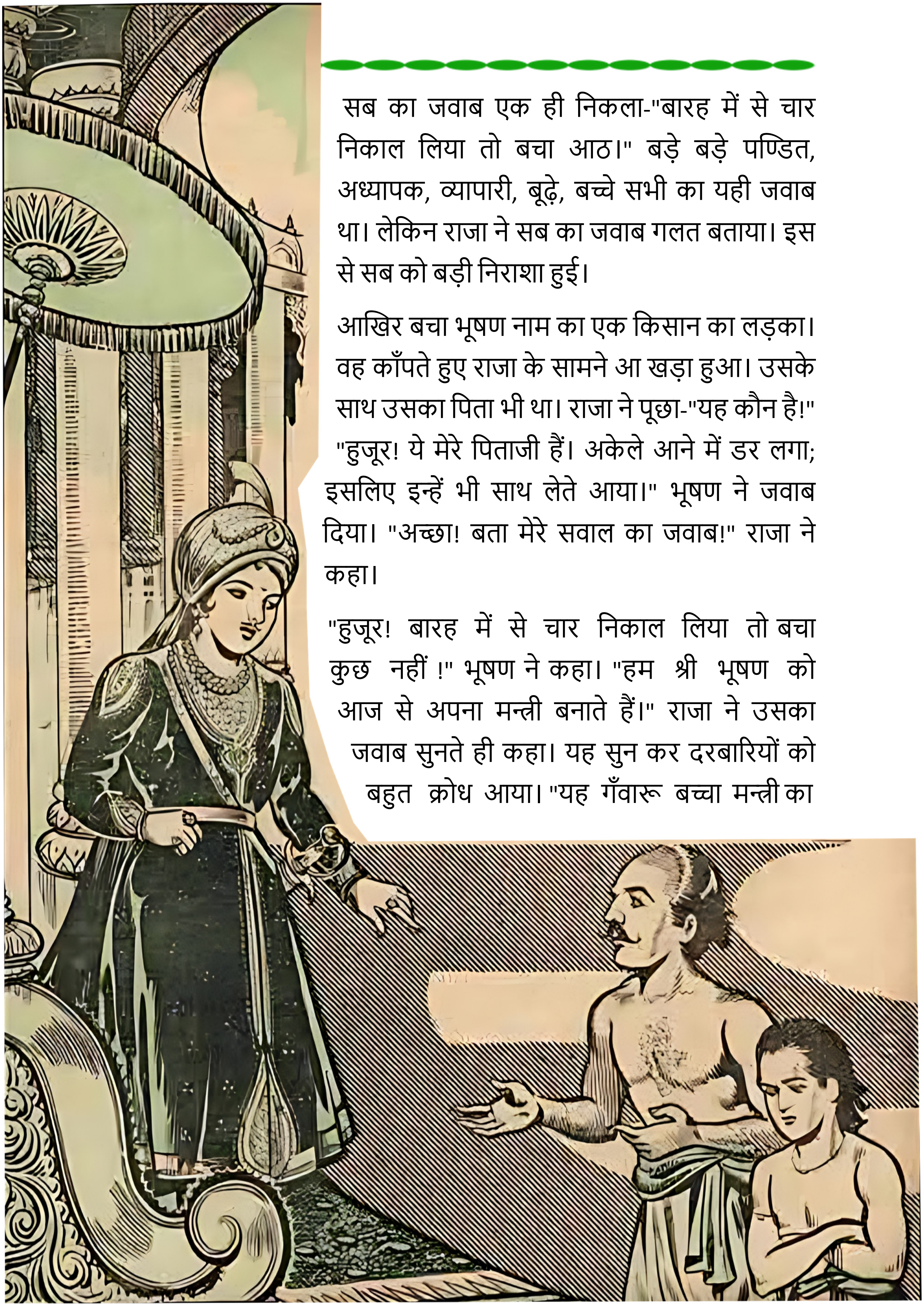

काम कैसे कर सकता है ?" वे कहने लगे।
"उसका जवाब सही है। हम अपनी घोषणा के अनुसार उसे अपना मन्त्री बनाते हैं।" राजा ने जवाब दिया।
"उसका जवाब सही कैसे हुआ? बारह में से चार निकाल लिया तो कुछ नहीं कैसे बचा ?" दरबारियों ने पूछा।

तब भूषण ने जवाब दिया-"हुजूर का सवाल उतना सीधा नहीं है। बारह में से चार निकाल लेने से क्या बच रहता है, यह तो हरेक बेवक़ूफ़ बता सकता है। मैं दिमाग लड़ाने लगा। तब मुझे सूझा कि बारह के माने साल के बारह महीने हैं। बारह में चार माने चौमासा; वर्षा ऋतु के चार महीने। वर्षा के बिना खेती-बारी नहीं हो सकती और खेती बारी के बिना संसार का काम नहीं चल सकता। इसलिए मैंने बताया-"बारह में चार निकाल लेने से कुछ नहीं बच रहता। यानी बारह महीनों में वर्षा के चार महीने न हुए तो कुछ नहीं बचेगा। सब चौपट हो जाएगा।" भूषण की चतुरता देख कर सब लोग दङ्ग रह गए।

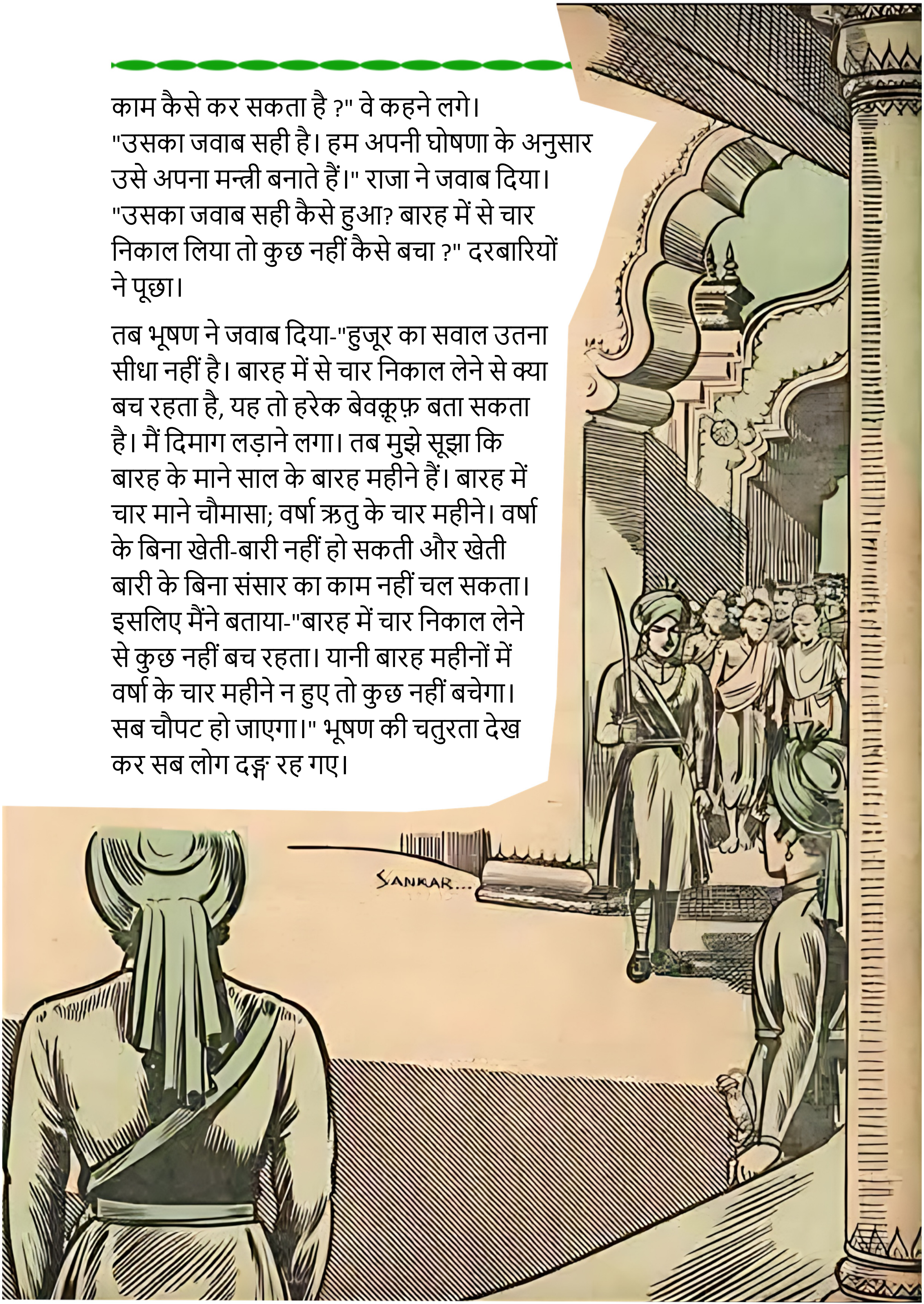

बीरबल की चतुरता

बादशाह अकबर बीरबल को बहुत चाहते थे। बीरबल था भी बड़ा चतुर; अपने हँसी मज़ाक से बादशाह को हमेशा खुश रखता था।

यह बहुत से लोगों को न सुहाता था। लेकिन बीरबल से झगड़ा मोल लेने में खैर न थी। इसलिए चुप रह जाते थे। एक बार बादशाह के हजाम को बातों के सिलसिले में बीरबल ने खूब छकाया। तब हजाम ने बीरबल से बदला लेने की ठान ली और उस दिन से वह तरह तरह के कुतन्त्र रचने लगा।

एक दिन उस हजाम ने बादशाह की हजामत बनाते वक्त कहा- "खुदाबन्द ! आपके बाप-दादा मुद्दत पहले विहिश्त चले गए। क्या उनकी खैरियत जानने की चाह आपके दिल में कभी पैदा नहीं होती ?"

"लेकिन यह तो नामुमकिन है न?" बादशाह ने कहा।

"नामुमकिन कैसे ? अपने किसी आदमी को भेजिए वहाँ ! लौट कर सारा हाल बता देगा।" हजाम ने जवाब दिया।

"हमें ऐसा अक्लमन्द कहाँ मिलेगा जो मौत को भी धोखा देकर लौट लाए ?" बादशाह ने पूछा।

बीरबल से बढ़कर अक्लमन्द और कहाँ मिलेगा ?" हजाम ने कहा। "लेकिन वह विहिश्त पहुँचेगा कैसे ?" तब बादशाह ने पूछा।

"इस में क्या लगा है ? आदमी को जब जला दिया जाता है तो वह धुआँ बन कर असमान में उड़ जाता है। यहाँ से विहिश्त जाने में ज्यादा मुश्किल नहीं होती।" हजाम ने कहा।

बादशाह हजाम के चक्कर में आ गए। दूसरे दिन उन्होंने बीरबल को बुला कर कहा-"बीरबल! तुम्हें मेरा एक काम करना

बजरङ्गी लाल

होगा।" "खुदाबन्द ! जैसा आप कहें!" बीरबल ने कहा।

"और तो कुछ नहीं; जरा बिहिश्त जाकर हमारे बाप-दादा का हाल-चाल पूछ आना है।" अकबर ने कहा और बताया कि बीरबल कैसे आसानी से विहिश्त जा सकता है। "लेकिन हुजूर ! क्या यह मुमकिन है! मिहिश्त जाकर फिर लौट आना ?" बीरबल ने हिचकिचाते हुए कहा। "अरे ! सब लोग कहते हैं, तुम बड़े अक्लमन्द हो। तुम से यह काम न हो सकेगा तो फिर किस से होगा ? मुझे पूरा यकीन है कि तुम्हारे लिए कुछ भी नामुमकिन नहीं।" बादशाह ने कहा।

अब बीरबल को मालूम हो गया कि यह इस तरह टलने की नहीं। फिर बादशाह का हुक्म ! क्या किया जाय ? वह दिमाग लड़ाने लगा। आखिर उसने कहा-"मैं ज़रूर खुदावन्द का हुक्म बजा लाऊँगा। लेकिन एक छोटी सी बिनती है। मैं अपनी माँ का इकलौता बेटा हूँ। इसलिए आप उसे धीरज बँधाने के लिए दस मन सोना आज ही भिजवा दीजिए ! हाँ, मुझे एक महीने की मोहलत दीजिए,

जिस से मैं सोच-विचार कर मौत को हराने की कोई तदबीर निकाल लूँ। इसी बीच जलने की जगह भी तय कर लूँगा।" बादशाह ने बीरबल की सभी बातें मान ली। उन्होंने उसी दिन दस मन सोना बीरबल की माता के पास भिजवा दिया। इधर बीरबल ने पूछ-ताछ करके जान लिया कि बरसों पहले मरे बाप-दादों का हाल जानने का यह अच्छा उपाय बादशाह को हजाम ने सुझाया है। उसने भी किसी न किसी तरह कसर निकालने की ठान ली।

कुछ ईमानदार मजदूरों को साथ ले जाकर उसने जङ्गल में एक गढ़ा खुदवाया। उस गढ़े के अन्दर ही उसने एक लम्बी सुरङ्ग

इसलिए ऐसा इन्तजाम कीजिए, जिससे जलते समय मुझे कोई न देख सके।" "सो कैसे !" बादशाह ने पूछा।

"मेरे चारों ओर लकड़ियाँ इस तरह चुनवा दीजिए, जिस से एक घोंसले सा बन जाए। फिर उस घोंसले में आग लगवा दीजिए। मैं तुरन्त धुआँ बन कर उड़ जाऊँगा और ओझल होकर विहिश्त पहुँच जाऊँगा।" बीरबल ने कहा।

खुदवा ली जिसका मुँह बहुत दूर कुछ झाड़ियों में जाकर खुलता था। फिर उसने पहले गढे की आधी गहराई तक तख्ते बिछाए और उन तख्तों पर मिट्टी बिछा कर जमीन की तरह कर दिया। देखनेवालों को जान पड़ता कि वही गढ़े का तला है। वे नहीं जान पाते कि नीचे और भी गढ़ा है।

आखिर वह दिन भी आ गया, जिस दिन बीरबल को बिहिश्त जाना था। तमाशा देखने के लिए बहुत से लोग उस जगह जमा हो गए थे। जो लोग बीरबल को देख कर मन ही मन जला करते थे, वे आज फूले न समा रहे थे। आखिर बीरबल ने बादशाह से कहा-"हुजूर ! मेरी एक प्रार्थना है। मुझे मौत को धोखा देना है न ?

बादशाह ने उसकी बात मान ली। लम्बी लकड़ियाँ लाई गई और बीरबल के चारों ओर इस तरह चुनी गईं कि एक घोंसले सा बन गया। वीरबल उस में छिप गया और तख्तों के नीचे से सुरङ्ग में घुस कर, झाड़ियों में छिपे हुए दूसरे गढ़े में से बाहर निकल गया।

इधर आग धधक उठी और लपटें हहराने लगीं। बीरबल को चाहने वाले सभी आँसू बहाने लगे।

दिन बीतते गए । आखिर महीनों बीत गए । मगर बेचारा बीरबल लौट न आया। लोग सोचने लगे-"हाय ! वीरवल सचमुच

बिहिश्त पहुँच गया। वह अब नहीं लौटने का।"

लेकिन अचानक एक दिन बढ़ी हुई दाढ़ी और बालों वाला एक आदमी अकबर के दरबार में आ धमका। अकबर ने उस जङ्गली आदमी को देख कर पूछा-"कौन है तू ?"

"हुजूर! इतनी जल्दी मूल गए मुझे ! मैं बीरबल हूँ। विहिश्त से आपके पुरखों की खबर लाया हूँ।" उस आदमी ने कहा।

पहले तो दरबार में किसी को विश्वास न हुआ; लेकिन बहुत से सबूत दिखाने के बाद सब को यकीन करना ही पड़ा।

"अच्छा, विहित की खबरें सुनाओ।" बादशाह ने पूछा। "क्या कहूँ जहाँपनाह! बिहिश्त तो सचमुच विहिश्त ही है। मेरा तो वहाँ से आने का मन ही नहीं होता था। लेकिन है वहाँ एक बड़ी दिकत ! वहाँ हजाम बिलकुल नहीं मिलते। देखिए न ! मेरे दाढ़ी बाल कैसे बढ़ गए हैं। आपके पुरखे भी बेचारे इस वजह से बड़े तङ्ग हैं। बीस-पचास बरस तक दाढ़ी बाल बढ़ाए रखना कोई मामूली बात है ? वे चाहते हैं कि आप यहाँ से अपना एक हजाम जल्दी वहाँ भेज दें।" बीरबल ने कहा।

अब तो हजाम के मुँह पर काटो तो खून नहीं ! बीरबल ने अपना बदला खूब चुका लिया था। अब पछताने से क्या फायदा !

शाही हजाम को विहिश्त जाना ही पड़ा। बेचारे में इतनी सूझ कहाँ थी कि बीरबल की तरह मौत के मुँह में घुस कर साफ निकल आए। उस दिन से बीरबल को देख कर उसके दुश्मन काँपने लगे।

वीरवल अपनी चतुरता से बाल बाल बच गया था। लेकिन शाही हजाम में यह चतुरता कहाँ थी ? इसी से वह मूरख नाहक मारा गया।

चोर की भलाइ

रमा देवी

एक चोर चाँदनी रात में चोरी करने निकला। लेकिन दुर्भाग्यवश उस रात सभी महलों के फाटक बन्द थे। इसलिए अन्त में वह एक झोंपड़ी में घुस गया। बह जानता था कि यह किसी गरीब का घर है। फिर भी भटक भटक कर हार मान गया और जब रीते हाथ लौटने का मन न हुआ तो झोपड़ी में ही घुस गया।

अन्दर बिलकुल अन्धेरा था। हाँ, एक कोने में छप्पर के एक बड़े छेद में से चाँदनी अन्दर घुस रही थी। शायद जाड़ा ज्यादा था, इसलिए उस झोंपड़ी के रहने वाले बूढ़े पति-पत्नी सिमट कर सोए हुए थे। इतने में बूढ़ी की नींद टूट गई और उसने चोर को देख लिया। लेकिन उसकी झोंपड़ी में चोरी जाने लायक चीज थी ही नहीं; इसलिए उसने सोचा-"उठने की कोई जरूरत नहीं। वह वैसे ही लेटी रही। फिर जाड़ा भी ज्यादा था।

धीरे धीरे चोर का साहस बढ़ गया और वह दियासलाई जला कर झोंपड़ी का कोना कोना ढूँढने लगा। लेकिन कहीं कुछ न दिखाई दिया। आखिर एक कोने में उसे एक हाँडी दिखाई दी। चोर ने सोचा-

"इस में सत्तू है।" इसलिए उसने सत्तू की पोटली बाँधने के लिए अपनी चादर जमीन पर बिछा दी। दियासलाई जलाना भी अच्छा नहीं था। इसलिए उसने चादर उस जगह बिछा दी जहाँ चाँदनी पड़ रही थी। सफेद चाँदनी में चोर की सफेद चादर बिछी हुई थी। रङ्ग में रङ्ग मिल गया था। यह जानना भी मुश्किल था कि कहाँ चादर है और कहाँ चाँदनी।

चोर सत्तू की हाँड़ी लाने के लिए अन्धेरे कोने में जाकर टटोलने लगा। इधर मौका पाकर बूढ़ी उठी और चोर की चादर लेकर, चुपचाप

जाकर खाट पर लेटी रही। इतने में चोर जाकर सत्तू ले आया और चाँदनी को चादर समझ कर सत्तू जमीन पर उँडेल कर पोटली बाँधने की कोशिश करने लगा। चाँदनी को चादर के छोर समझ कर बेचारा बहुत खींचने लगा। लेकिन वे हाथ में आते ही न थे। तब चोर को शक हुआ। इतने में बुढ़िया बोली-"चोर भैया ! तुम्हारी कृपा से मुझे ओढ़ने के लिए चादर मिल गई। कृपा करके और भी एक चादर दे दो जिस से मेरे पतिदेव का भी काम निकल जाय।" चोर दुम दबा कर भागा।

भानुदास

गोदावरी नदी के तीर पर पैठण नाम के गाँव में सूरज भगवान की उपासना करने वाला एक ब्राम्हण रहा करता था। बहुत दिन तक निरसन्तान रहने के बाद आखिर भगवान की कृपा से किसी तरह उसका एक लड़का पैदा हुआ। ब्राह्मण ने उसका नाम भानुदास रखा और बड़े लाड़-प्यार से पालने लगा।

भानुदास की जब पाँच साल की उमर हो गई तो उसके पिता ने उसे गुरूजी के पास पढ़ने भेजा। लेकिन इस लड़के का पढ़ने-लिखने में मन नहीं लगता था। पाठ पढ़ते वक्त उसका मन और कहीं चक्कर लगाता रहता था। तब गुरूजी ने उसके पिता से शिकायत की कि "आपका लड़का मन लगा कर नहीं पढता।" पिता को बहुत क्रोध आया। उसने भानुदास को एक पेड़ से बाँध दिया और खूब खबर की।

कोमल हृदय वाला यह बालक बहुत भयभीत हो गया। उसने सोचा-"मुझे पढ़ना-लिखना तो कुछ आयगा नहीं; पिताजी के हाथ हमेशा इसी तरह मार खानी पड़ेगी !" यह सोच कर वह रातों-रात घर से भाग निकला।

उस गाँव के नज़दीक ही एक जङ्गल था। भानुदास चलते चलते उस जङ्गल के पास पहुँचा। जङ्गल के बीचों-बीच निर्जन प्रदेश में उसे एक पुराना, उजड़ा मन्दिर दिखाई दिया। वह विठ्ठल भगवान का मन्दिर था। भानुदास ने मन्दिर के मण्डप में बैठ कर किसी तरह डर से थर-थर काँपते हुए रात बिताई।

हरिनारायण पाण्डे

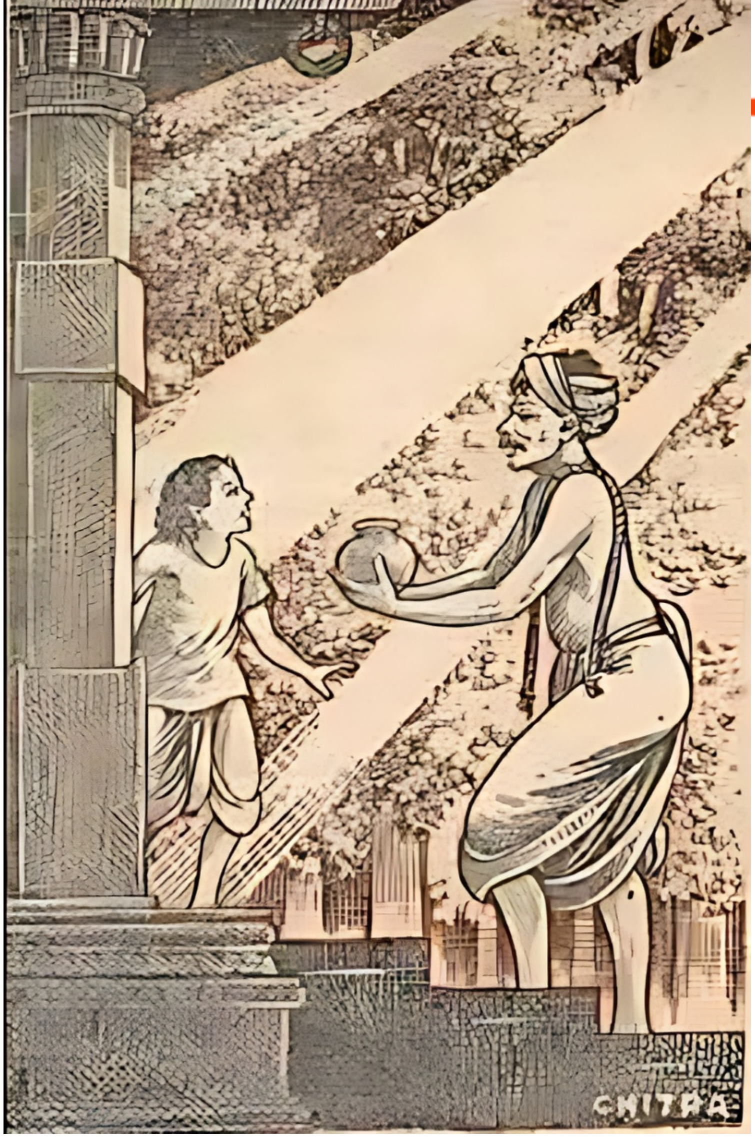

सबेरा हुआ। दिन की रोशनी में वह घना जङ्गल और भी डरावना मालूम होने लगा। इतने में भानुदास की नज़र मन्दिर में विठ्ठल भगवान की मूर्ति पर पड़ी। तुरन्त उसकी आँखें खुल सी गई। पूर्व जन्म का संस्कार एक बाढ़ की तरह उमड़ चला। वह मूरख बालक जो मन लगा कर पाठ भी नहीं पढ़ सकता था, उच्च कण्ठ से भगवान पाण्डुरङ्ग विठ्ठल की स्तुति करने लगा। धीरे-धीरे दोपहर हो गयी। भूख-प्यास के मारे भानुदास बहुत व्याकुल हो गया। फिर भी उसने अपनी धुन न छोड़ी।

इतने में बाहर से किसी ने उसे "भानुदास" कह कर पुकारा। बालक ने बाहर आकर देखा तो एक ग्वाला दूध से भरा लोटा हाथ में लिए खड़ा था।

"बेटा! तुम्हें देखने से मालूम होता है, बहुत भूखे हो ! इस लोटे में दूध है; क्यों न पी लो ?" उस ग्वाले ने बड़े प्रेम से कहा।

भानुदास पहले तो जरा हिचकिचाया। लेकिन अन्त में लोटा उठा कर दूध पी गया। ग्वाला जैसे आया था वैसे ही चला गया।

उस दिन से रोज़ दोपहर को ग्वाला लोटे में दूध ला कर भानुदास को दे जाने लगा। पेट की चिन्ता से छुटकारा पा कर भानुदास अब अपना सारा समय भगवान के ध्यान में बिताने लगा। उसने इतना भी नहीं सोचा कि यह ग्वाला कौन है और उसे इस तरह क्यों रोज़ दूध लाकर दे जा रहा है ! भगवान के ध्यान में लगे हुए, उस बालक के मन को ऐसी छोटी-मोटी बातें सोचने की फुरसत न थी। उस बालक को क्या पता कि यह ग्वाला

और कोई नहीं, साक्षात विठ्ठल भगवान हैं। इस तरह बरसों बीत गए। भानुदास उसी जङ्गल में ग्वाले के रूप में विठ्ठल भगवान के लाए हुए दूध से पल कर बड़ा हो गया। एक दिन पैठण गाँव का रहने वाला एक लकड़हारा उस जङ्गल में लकड़ियाँ काटने आया। उस उजड़े मन्दिर के निकट ही एक पेड़ पर चढ़ कर वह लकड़ियाँ काट रहा था कि इतने में कानों में अमृत घोलने वाला मधुर, भक्ति पूर्ण गान सुनाई दिया। उसने सोचा-"यह कौन गा रहा है ?" मन्दिर के पास जाकर झाँक कर अन्दर देखा तो उसे भानुदास का तेजोमय ध्यान-मन रूप दिखाई दिया।

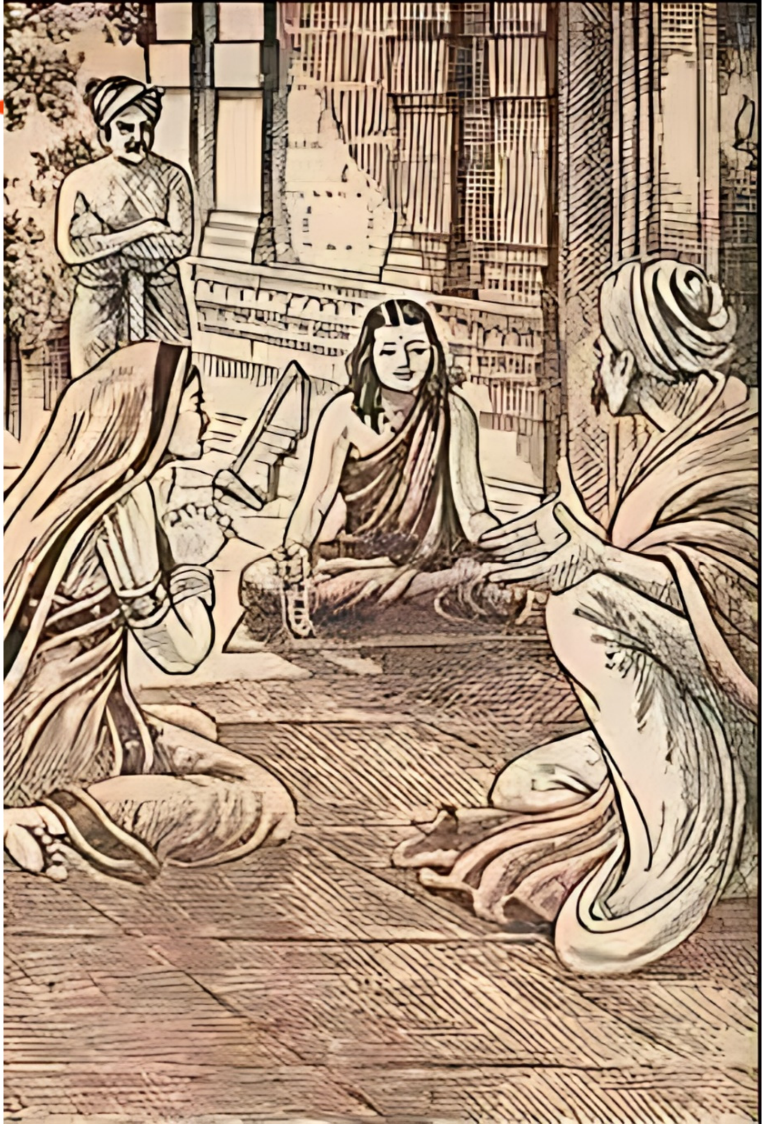

उस लकड़हारे को मालूम था कि बरसों पहले उसी के गाँव का एक ब्राम्हण का लड़का भाग गया था। उसने सोचा-"हो न हो, यह वही बालक है।" उलटे पाँव लौट कर उसने भानुदास के माँ-बाप को खबर दी। वे बेचारे फूले न समाए। तुरन्त वहाँ दौड़े आए। भानुदास को देखते ही पहचान लिया और "बेटा! तुम इतने दिन से कहाँ थे ?"

कह कर गले से लगा लिया। वे उसे तुरन्त घर लौटा ले जाने की कोशिश करने लगे।

लेकिन भानुदास ने कहा-"पिताजी ! मैं यह मन्दिर छोड़ कर नहीं आ सकता।"

"तब हम लोग भी खाना-पीना छोड़ कर, यहीं धरना देंगे और जान दे देंगे। हम अब तुम से बिछुड़ कर नहीं जी सकते।" माता-पिता ने कहा।

तब भानुदास ने ध्यान लगा कर भगवान को याद किया। भगवान ने उसके ध्यान में प्रत्यक्ष

होकर आदेश दिया-"भानुदास ! तुम घर लौट जाओ और गृहस्थ बन कर अपने माता- पिता को सन्तुष्ट करो।" तब भानुदास घर लौट चला और माता-पिता के आनन्द का ठिकाना न रहा।

इस तरह भानुदास घर लौट कर सुख से दिन बिताने लगा। शुभ-समय पाकर माता पिता ने उसका ब्याह भी कर दिया।

और कुछ बरस बीत गए। भानुदास के माता-पिता चल बसे। अब गृहस्थी का सारा बोझ भानुदास को अकेले ढोना पड़ा।

हमेशा भगवान के ध्यान में लगे रहने और पैसे कमाने की फिक्र न करने के कारण भानुदास के दिन गरीबी में बीतने लगे। पेट पालना भी मुश्किल हो गया।

एक दिन कई गाँव वालों ने उसके पास आकर कहा-"भैया ! पुरुष को जिन चार चीजों की आवश्यकता होती है, उनमें अर्थ भी एक है। कहा भी है-'भूखे भजन न होइ गोपाला !' खास कर गृहस्थ को तो परिवार की चिन्ता करनी ही होती है। भैया ! तुम कोई व्यापार क्यों नहीं कर लेते !"

तब भानुदास ने कहा-"भाइयो! व्यापार करने के लिए तो पूञ्जी चाहिए। पूञ्जी कहाँ से लाऊँ मैं ?"

पूञ्जी की फिक्र मत करो! हम लोग पूञ्जी जुटा देंगे ! पीछे हमारा कर्ज चुका देना।" उन लोगों ने कहा।

इस तरह उन लोगों के बहुत आग्रह करने पर मानुदास ने उनकी बात मान ली। उसके हिचकिचाने की और भी एक वजह थी। उसने सोचा -"हरेक व्यापार करने वाले

को झूठ बोलना ही पड़ता है; दूसरों को ठगना ही पड़ता है। लेकिन नफा हो या नुकसान, झूठ बोले बिना ही व्यापार करने की कोशिश करूँगा।"

इस तरह गाँव वालों के बहुत कहने-सुनने पर भानुदास ने कर्ज लाई पूञ्जी से कपड़ों की एक दुकान खोल दी। वह अपने निश्वयानुसार कभी झूठ नहीं बोला। ग्राहकों को ठीक ठीक बता देता कि माल में लागत कितनी लगी और उसे नफा कितना हो रहा है। इस कारण से ग्राहकों को उस पर बहुत विश्वास हो गया। सब लोग उसी की दूकान पर आकर कपड़े खरीदने लगे। व्यापार खूब चल निकला। पूञ्जी जिन जिन से कर्ज लाया था उन सब का कर्ज उसने चुका दिया।

भानुदास की इस तरह बढ़ती होते देख कर बहुत से लोग उससे जलने लगे। खास कर जिन लोगों से कर्ज लेकर उस ने चुका दिया था, वे सब उससे बहुत डाह करने लगे और उसकी बुराई करने की सोचने लगे।

एक बार उन लोगों ने माल खरीदने के लिए दूर-देश जाते वक्त भानुदास

को भी अपने साथ बुलाया। भानुदास बहुत सा रुपया लेकर उनके साथ रवाना हुआ। वे सभी घोड़ों पर सवार होकर सफर कर रहे थे। रात को सब ने एक गाँव की धर्मशाला में मुकाम किया। खा-पी चुकने के बाद उनको मालूम हुआ कि एक जगह कथा हो रही है। तुरन्त भानुदास उठ कर कथा सुनने चला। उसने अपने साथियों को भी बुलाया; लेकिन उन लोगों ने आने से इनकार कर दिया। उसके जाते ही साथियों ने उसके रुपये चुरा

लिए, घोड़े को भगा दिया और अपने घोड़ों पर सवार होकर रफूचकर हो गए।

बड़ी देर बाद जब भानुदास कथा सुन कर धर्मशाला को लौट रहा था तो उसे राह में एक आदमी एक घोड़े की रास यामे खड़ा दिखाई दिया। यह घोड़ा मानुदास का था। "मेरा घोड़ा तुम्हें कैसे मिला ?" भानुदास ने पूछा। लेकिन वह व्यक्ति कुछ न बोला और एक रुपयों की थैली देकर ओझल हो गया। वह थैली भी उसी की थी। मानुदास को बहुत आश्चर्य हुआ। घोड़ा दौड़ा कर धर्मशाला के पास गया तो देखा कि साथी सभी गायब हैं। वह घोड़े पर सवार होकर उन्हें खोजते हुए चला। कुछ दूर जाने के बाद नदी के किनारे के सभी रोते-चिल्लाते दिखाई दिए। भानुदास को देखते ही वे आकर पैरों पर गिरे और कहने लगे-"भैया! माफ करो। फिर कभी ऐसी चूक न होगी।" भानुदास की समझ में न आया कि ये किस बात की माफी माँग रहे हैं। "आखिर बात क्या हुई। बताओ तो।" उसने पूछा। "क्या बताएँ ? हम लोग तुम से बहुत जलते थे। इसलिए ज्यों ही तुम कथा सुनने गए, हमने तुम्हारा रुपया चुरा लिया और भाग चले। नदी के किनारे आते ही लुटेरों ने हमला किया और मार-पीट कर हमारा सारा रुपया लूट लिया। भगवान ने हमें यों पाप का दण्ड दिया।" वे रोते हुए बोले।

तब भानुदास को मान हो गया कि यह सब विठ्ठल भगवान की करामात है। उसने कहा-"भाइयो। मैं नाचीज़ हूँ। तुम सभी भगवान विठ्ठल की प्रार्थना करो। वे ही तुम लोगों को माफ कर देंगे।" उस दिन से भानुदास ने व्यापार बन्द कर दिया और भगवान के ध्यान में ही अपना सारा समय बिताने लगा।

किसी समय रत्नद्वीप पर चित्रसेन नाम का राजा राज करता था। बहुत दिन तक इन्तजार करने के बाद आखिर उसकी एक लड़की पैदा हुई। वह बहुत खूबसूरत थी। उसके घने, घुँघुराले केश काले रेशम की तरह चमाचम चमकते थे। इसलिए उसका नाम ही सुकेशिनी रखा गया।

सुकेशिनी की सोलहवीं बरस-गाँठ बड़ी धूप-धूम के साथ मनाई जा रही थी। ऐसे समय किङ्किणी नाम की दानवी एक भिखारिन का रूप धर कर रनवास में घुस गई। उसने सीधे जाकर राजकुमारी से भीख माँगी। बेचारी सुकेशिनी को क्या मालूम था कि यह कौन है ! वह झल्लाई और कहने लगी-"जा जा। अभी फुरसत मिली है तुझे भीख माँगने के लिए ? फिर कभी आना !" तब उस दानवी को बहुत क्रोध आ गया और उसने शाप दिया-"तू अपनी सुन्दरता देख कर बहुत इतरा रही है। तुझे मान है कि तेरे जैसे केश संसार में और किसी सुन्दरी के नहीं हैं। जा, तेरे सारे केश झड जाएँगे और तेरा गर्व चूर चूर हो जाएगा !"

अब तो राजकुमारी घबरा कर गिड़गिड़ाना चाहती थी कि शाप लौटा लो ! लेकिन उसके कुछ कहने के पहले ही दानवी ओझल हो गई। बस, बेचारी राजकुमारी के सारे केश झड़ गए और यह देखने में बड़ी भद्दी लगने लगी। उसे देख कर सब लोगों को हँसी आ जाती, लेकिन राजा के डर से दबा लेते।

खैर, बेचारी सुकेशिनी के माँ-बाप ने किसी तरह उसे धीरज बँधाया। राजा-मन्त्री आदि सभी राजकुमारी के केश फिर से उगाने की कोशिशों में लग गए। देश-विदेश से हकीम वैद्य बुलाए गए; बड़े बड़े ओझा आकर झाड़-फूँक कर चले गए लेकिन कोई फायदा न हुआ।

रामदयाल गुप्त

आखिर एक साधू ने आकर सलाह दी कि राजकुमारी लक्ष्मी-ब्रत करें तो अच्छा हो। इसलिए राजकुमारी रोज़ उठ कर बड़ी भक्ति के साथ देवी लक्ष्मी की पूजा करने लगीं। यों एक साल बीत गया। आखिर एक दिन देवी ने प्रत्यक्ष होकर पूछा- "बोलो, क्या चाहती हो !"

राजकुमारी जो बहुत दिन से सफाचट सिर लिए, काले, घने केशों वाले अपने पुराने दिनों की याद करके, मन ही मन छटपटा रही थी, यह सुन कर जल्दी में कह बैठी- "देवी! ऐसा वर दो, जिस से मेरे केश हर रोज एक अंगुल बढ़ने लगे और किसी कारण उन्हें कतरना पड़े तो दुगुने वेग से बढ़ने लगे।" लक्ष्मी ने 'तथास्तु' कर दिया और अदृश्य हो गई।

अब राजकुमारी के केश एक अंगुल रोजाना बढ़ने लगे। पाँच सप्ताह होते होते चे गज भर लम्बे हो गए। राजकुमारी को अपनी सुन्दरता फिर से मिल गई।

पाँच सप्ताह और बीते। राजकुमारी के केश अब दो गज लम्बे हो गए और जमीन को बुहारने लगे। पाँच सप्ताह और बीतते ही केशों की लम्बाई तीन गज हो गई। अब तो उन्हें कतरने के सिवा कोई चारा न था। लेकिन कतरने की भी देर न थी कि वे दो अंगुल रोजाना बढ़ने लगे। देवी ने जो घर दिया था, वह अक्षरशः पूरा होने लगा।

अब कतरने से भी कोई फायदा न रहा। कतरने पर केश और भी जल्दी जल्दी बढ़ने लगे। कतरे बिना रहा भी न जाता था।

राजकुमारी के जागने के पहले ही रोज दो आदमी केश कतर देते और उन कतरे हुए गुच्छों को गाड़ियों पर लाद कर नगर के बाहर ले जाकर फेंक आते।

हालत दिन-दिन बिगड़ती ही गई। राजकुमारी के सोने के लिए और भी लम्बे-चौड़े कमरे की जरूरत पड़ने लगी। किसी को न सूझा कि क्या किया जाय। आखिर हालत यहाँ तक आ पहुँची कि राजकुमारी जिन्दगी से ऊब बैठी। वे सोचने लगी-"सुन्दरता जाय भाड़ में।

सफाचट सर ही अच्छा है इस से !" आखिर राजा ने बेटी की यह दुर्दशा देख कर देश-देश में घोषणा करा दी। उस घोषणा का मतलब था कि जो बीर-पुरुष राजकुमारी के केशों का बढ़ना रोक देंगे, उन्हें राजकुमारी के साथ-साथ सारा राज भी दे दिया जाएगा। यह घोषणा सुन कर बहुत से लोग राज्य लोभ से अपने और अपना भाग्य अजमाने लगे। लेकिन किसी से यह काम न हो सका। आखिर इन्द्रनाथ नाम का एक बुद्धिशाली राजकुमार आया। उसने खूब दिमाग लड़ा कर एक

उपाय सोच निकाला और जाकर राजकुमारी से कहा-'कुमारी! आज रात तुम महल में ऊपरी मञ्जिल पर सोना। मैं नीचे बाग में खड़ा रहूँगा। तुम रात भर जागती रहना। ज्यों ही केश बढ़ने लगे, मुझे पुकारना।"

इन्द्रनाथ के कहने के मुताबिक, ज्यों ही आधी रात हुई और केश बढ़ने लगे, तुरन्त सुकेशिनी ने चिल्ला कर उसे सावधान कर

दिया । तब इन्द्रनाथ ने कहा- "अच्छा, अपने केशों को खिड़की के सीखञ्चों से कस कर बाँध दो और धीरे-धीरे नीचे उतर आओ।"

राजकुमारी ने उसके कहने के मुताबिक केशों को खिड़की के सीखञ्चों से कस कर बाँध दिया और धीरे से नीचे उतरने लगी। जब वह जमीन तक पहुँच गई तो इन्द्रनाथ ने कैञ्ची लेकर उसे केशों से कतर डाला। तुरन्त राजकुमारी के केशों का बढ़ना रुक गया।

सवेरे जब यह खबर चारों ओर फैल गयी तो लोग बहुत अचरज करने लगे। राजा के पूछने पर इन्द्रनाथ ने बताया-"हुजूर इस में कोई खास बात तो नहीं। पहले आप सभी केशों को राजकुमारी से कतरवाते थे। इसलिए केश ही बढ़ते थे। मैंने केशों से राजकुमारी को कतर डाला। इसलिए केशों का बढ़ना तुरन्त रुक गया।" यह सुन कर सब लोगों ने इन्द्रनाथ की बुद्धिमत्ता को सराहा। लेकिन इस बीच और एक सङ्कट टूट पड़ा था। राजकुमारी के केशों का बढ़ना तो रुक गया था। लेकिन अब राजकुमारी स्वयं बढ़ने लगी थी। उनकी दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती होने

लगी थी। राज-महल उनके लिए छोटा पड़ गया था। इसलिए उन्हें अब खुले मैदान में जाकर रहना पड़ा। जब मैदान भी छोटा पड़ गया तो समुन्दर में उतर कर बसेरा करना पड़ा। राजकुमारी की बढ़ती का कुछ अन्दाजा इसी बात से लग सकता है कि समुन्दर का पानी उनके घुटनों तक भी नहीं पहुँचा। पहले तो खैर, केश ही थे; इसलिए किसी तरह कतरे जाते थे। लेकिन अब राजकुमारी को तो कतरा नहीं जा सकता था।

इस तरह सारे रत्नद्वीप में खलबली मच गयी। मौका पाकर दुश्मन लोग बड़े-बड़े जहाजों में चढ़ आए और द्वीप के चारों ओर घेरा डाल दिया। राजा और मन्त्री की अकल ही मारी गई। उन्हें नहीं सूझा कि इस बला से बचने का क्या रास्ता है।

लेकिन जब राजकुमारी ने यह खबर सुनी तो मुसकुराने लगीं। यह तो उनके लिए बाएँ हाथ का खेल था। लेकिन स्वभाव उनका बड़ा दयालु था। वे नहीं चाहती थीं कि दुश्मनों को भी कष्ट पहुँचे। इसलिए उन्होंने रत्न-द्वीप को समूल उखाड़ कर हथेली में ले लिया और समुन्दर में हजारों मील ले जाकर और एक जगह रख

दिया। लोग फिर से निश्चित होकर अपना जीवन बिताने लगे।

राजकुमारी जब रत्न-द्वीप को उखाड़ने के लिए नीचे झुकी, उस वक्त इन्द्रनाथ किसी तरह रेङ्ग कर उनके कन्धे पर चढ़ गया और वहाँ से धीरे धीरे कानों तक जा पहुँचा। राजकुमारी ने समझा कि यह कोई कीड़ा-मकोड़ा है। इन्द्रनाथ की आवाज सुनने के बाद ही उन्होंने उसे पहचाना।

"राजकुमारी! मैं इन्द्रनाथ हूँ। मैं फिर तुम्हारे केश कतरने जा रहा हूँ। तब केश बढ़ने लगेंगे और तुम्हारा मामूली डील-डॉल हो जाएगा।" इन्द्रनाथ ने कहा। राजकुमारी ने कहा-"अच्छा।"

"जब पहले की सी देह हो जायगी तो होशियारी के साथ किनारे तक तैरना पड़ेगा।" इन्द्रनाथ ने कहा और केश कतर डाले। तुरन्त राजकुमारी पहले जैसी हो गई और केश बढ़ने लगे।

किसी तरह दोनों तैर कर किनारे पहुँचे। इस तरह यह सङ्कट तो कट गया था; लेकिन केश फिर से पहले की तरह लगे थे। किसी तरह इस बला को भी टालना था। इन्द्रनाथ ने बहुत दिमाग लड़ाया।

आखिर खूब सोच-विचार कर उसने एक बड़ा तराजू मँगाया और एक पलड़े में राजकुमारी को बिठा दिया। तुरन्त पलड़ा जमीन को छूने लगा। तब इन्द्रनाथ उनके बढ़ते हुए केश कतरने और दूसरे पलड़े में रखने लगा। अब धीरे धीरे दूसरा पलड़ा भी भारी हो चला और नीचे झुकने लगा। राजकुमारी जिस पलड़े में बैठी हुई थीं, वह ऊपर उठने लगा।

आखिर थोड़ी देर बाद दोनों पलड़े बराबर हो गए। तब इन्द्रनाथ ने झट से राजकुमारी के केश कतर डाले।

सब से अजीब बात यह थी कि इस हालत में राजकुमारी के केशों का बढ़ना रुक गया। इसका एक कारण था। वह यही था कि यह निश्चय नहीं हो पाने से कि राजकुमारी और उसके केश, दोनों में से किसको बढ़ना है, दोनों की बढ़ती एकाएक रुक गई। सुकेशिनी ने इन्द्रनाथ से व्याह करके अपनी कृतज्ञता प्रगट की।

CHANDAMAMA (Hindi) MARCH 1953 Regd. No. M 5452

रङ्गीन चित्र-कथा, चित्र – २